

भूमिका

साहित्य समाज की लगभग प्रत्येक घटना का साक्षी होता है और इसी साक्ष्य के आधार पर तत्काल तथा समकालीन संदर्भों में इतिहास की घटनाओं का विवेचन-विश्लेषण होता है। साहित्य संवेदनाओं का रूपांतरण है और सांप्रदायिकता का प्रत्यक्ष परिणाम विभाजन से संबंधित साहित्य में दिखाई पड़ता है। यूँ तो सांप्रदायिकता भारत के लिए हमेशा से एक ज्वलंत मुद्दा रही है, लेकिन 1991-1992 में रामजन्म भूमि विवाद के दंगों के बाद एक बार फिर लोकतंत्र को झटका लगा और दंगों के कारण नफ़रत की चिंगारी को हवा मिली जो आज तक किसी न किसी बहाने से बरकरार है। ऊपर से यह समस्या सुलझी हुई लगती है लेकिन बारीकी से देखा जाये तो इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। समस्या कहीं और नहीं हमारी संवेदनाओं की गहराइयों में बैठी हुई है और सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक स्थितियों का आधार पाकर भड़क उठती है। सांप्रदायिकता की भावना हमारी साँझी संस्कृति को नुकसान पहुंचाती है, लेखक ने इसे तथ्य के साथ प्रमाणित करने का प्रयास किया है। एक धर्म दूसरे धर्मों की तुलना में अपने धर्म को श्रेष्ठ सिद्ध करने हेतु छल-छद्म, शास्त्र, धर्म व राजनीति का धिनौना प्रयोग करने से नहीं हिचकते हैं। स्वार्थी नेतागण इस समस्या का जड़ से नाश करने के लिए तत्पर नहीं हैं अन्यथा यह समस्या जल्द ही समाप्त हो जाती या हो जाये। ये अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु दंगों की आग को हमेशा जलाए रखना चाहते हैं।

मुद्राराक्षस ने अपनी कहानियों के माध्यम से सांप्रदायिकता की समस्या के पीछे मौजूद ताकतों एवं महीन तंतुओं को जानने एवं समझने की दृष्टि दी है। मुद्राराक्षस साठोत्तरी कहानीकारों में आते हैं। उन्होंने अपने चारों तरफ फैले व्यापक सामाजिक परिवेश से जुड़कर अपनी सार्थकता प्रमाणित की है। मुद्राराक्षस नाम सुनते ही जेहन में अति प्रसिद्ध नाटककार विशाखदत्त के नाटक 'मुद्राराक्षस' की याद आती है या फिर इसी नाटक का अनुवाद जिसे सन् 1878 में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने किया था उसका नाम भी मुद्राराक्षस है। इन दोनों नामों का कोई संबंध नहीं है फिर भी उस नाटक

में आनेवाला पात्र मुद्राराक्षस है जो अपने राजा से कहता है- “अपनों देश धरम कुल समुझहु ! वृत्ति निज दासी।” मतलब राजा साहब केवल स्वयं उच्च पद पाने के प्रलोभन में फंसकर देशहित और प्रजाहित को भूल जाते हो। जिसने तुझे गद्दी दी है उसी को भूल जाना ठीक नहीं है। इसी तरह आज देश पर शासन करने वाले सत्ताधारियों को भी अपनी कृतियों के माध्यम से सुभाषचंद्र आर्य (मुद्राराक्षस) यही सन्देश देते नज़र आते हैं। राजनीति का अर्थ क्या हमेशा से अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को लूटना रहा है? ऐसा नहीं है क्योंकि जब यह शब्द चलन में आया होगा तब निश्चित ही इसका अर्थ ऊँचा रहा होगा। तभी तो श्री राम से राज्य मिल जाने के बाद भी भरत उसे स्वीकार नहीं करते। अगर भरत के हृदय में नाम मात्र भी राजनीति आयी होती तो श्री राम के वनगमन पर खुशियाँ मनाते, माताओं और भाइयों की पत्नियों को देश निकाला या कारावास दे देते, छोटे भाई शत्रुघ्न को किसी न किसी तरह अपने साथ कर लेते, राम के चौदह वर्ष के वनवास को अट्ठाइस वर्षों में बदल देते आदि। लेकिन ऐसा नहीं हुआ ये सब आज के ‘राजनीति’ शब्द के लक्षण हैं जो अपने स्तर से नीचे गिर गया है और अपना अर्थ खो दिया। आज के समय में आपस में विग्रह, विद्वेष, हिंसा, भेदभाव बढ़ाने का ही दूसरा नाम राजनीति है जिसके कारण सांप्रदायिक जैसी समस्या उपजती है।

अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध प्रबंध को तीन अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय ‘मुद्राराक्षस और उनकी रचनाएँ’ में लेखक का सामान्य परिचय देते हुए लेखक के महत्व को रेखांकित किया गया है। द्वितीय अध्याय ‘सांप्रदायिकता: अवधारणा एवं स्वरूप’ में सांप्रदायिकता के अर्थ एवं स्वरूप को समझाते हुए हिन्दी कहानियों में सांप्रदायिकता की क्या स्थिति है उसे स्पष्ट करने का प्रयास किया है। तृतीय अध्याय में ‘मुद्राराक्षस की कहानियों में अभिव्यक्त सांप्रदायिकता की समस्या’ में रचनाकार की कहानियों का अध्ययन करते हुए सांप्रदायिकता की समस्या के स्वरूप को विश्लेषित करने का प्रयास किया है।

अपने शोध-निर्देशक डॉ अमित कुमार सर को मैं सहृदय धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने गद्य में मेरी रूचि देखते हुए बहुत विचार विमर्श करने के पश्चात यह विषय (मुद्राराक्षस की कहानियों में सांप्रदायिकता की समस्या) मुझे सुझाया और जिनके स्नेहिल सहयोग और मार्गदर्शन के बिना यह शोध कार्य पूर्ण होना असम्भव था। इसी के साथ डॉ सिद्धार्थ शंकर राय सर से समय-समय पर शोध से संबंधित पूर्ण सहयोग एवं जानकारी प्राप्त होती रही। इनके अतिरिक्त डॉ अरविन्द सिंह तेजावत सर का आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही श्री रोमेल मुद्राराक्षस जी (मुद्राराक्षस के पुत्र) की आभारी हूँ जिन्होंने मुद्राराक्षस के बारे में भरपूर जानकारी दी जिससे शोध-कार्य को नई दिशा मिली।

माँ-पापा का प्यार कदम-कदम पर मिलता रहा। उनके प्रति शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित नहीं की जा सकती। दोनों दीदी-जीजाजी एवं दोस्त वैभव की आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा हौसला बढ़ाया। साथ ही सभी वरिष्ठ शोधार्थी एवं मित्रों का धन्यवाद व्यक्त करती हूँ। शोध के दौरान विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकों का उपयोग मैंने अध्ययन के लिए किया, विशेष रूप से दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के कर्मचारियों का सहृदय धन्यवाद जिन्होंने भरपूर सहयोग दिया।

13 जुलाई 2018

(लीशा यादव)